DR. Manoj Kumar, Economics, YBN University, Ranchi

TEACHING MATERIAL ON

Economics

22/6

मुद्रा के परिमाण सिद्धांत

v.v.g + v.v.g
for 2001

Q:① Critically Examine Cambridge version of qunatity theory of money. Is it supeirior to fisherian version?

मुद्रा के परिमाण सिद्धांत के कैम्ब्रिज दृष्टिकोण की आलोचनात्मक व्याख्या करें। क्या यह फिशर के दृष्टिकोण से श्रेष्ठ है?

.OR. अथवा.

* Explain cash blance apporoch of quantity theory of money.

मुद्रा के परिमाण सिद्धांत के नगद शेष दृष्टिकोण की व्याख्या करें।

Ans:→ मुद्रा के परिमाण सिद्धांत के नगद शेष दृष्टिकोण का प्रतिपादन कैम्ब्रिज के अर्थशास्त्रियों मार्शल, पीगू एवं रॉबर्टसन ने किया, इन्होंने मुद्रा के मूल्य को निर्धारित करने वाले तत्वों का विश्लेषण कर मुद्रा के मूल्य में परिवर्तन के कारणों की व्याख्या की है। सामान्य मूल्य स्तर एवं मुद्रा के मूल्य के बीच विपरीत सम्बन्ध होता है।

$$V = \frac{1}{P}$$

कैम्ब्रिज के अर्थशास्त्रियों के अनुसार मुद्रा का मूल्य मुद्रा की माँग एवं पूर्ति से निर्धारित होता है।

मुद्रा की पूर्ति का अर्थ एक दिए हुए समय बिन्दु पर धातु, मुद्रा, पत्र मुद्रा एवं माँग जमा राशियाँ (Demand Deposit) हैं जिन्हें चेकों द्वारा निकाला जा सकता है।

मुद्रा की माँग का अर्थ मुद्रा की वह राशि है जिसे लोग नगद रूप में अपने पास रखना चाहते हैं इसलिए इसे "बैठी हुई मुद्रा कहा जाता है।" जबकि, फिशर की "मुद्रा को उड़ती हुई मुद्रा

कहते हैं। फिशर के अनुसार मुद्रा विनिमय का माध्यम है जबकि कैम्ब्रिज का मुद्रा संचय का साधन है।

प्रो० मार्शल को मुद्रा के मूल्य के विश्लेषण के लिए निम्नलिखित समीकरण दिए गए हैं :—

$$M = Ky \quad —— (I)$$

जहाँ ; K = वास्तविक आय का वह भाग जिसे लोग नगद रूप में अपने पास रखना चाहते हैं।
y = मौद्रिक आय,
M = मुद्रा की मात्रा है।

$$y = P \cdot O \quad —— (II)$$

जहाँ : P = मूल्य स्तर ;
O = उत्पादन

इसे समीकरण (I) में लगाने पर :—

$$M = K \cdot P \cdot O$$

or $K\,PO = M$

तो . $P = \dfrac{M}{KO}$ —— (III)

मूल्य = मुद्रा की मात्रा / (वास्तविक आय उत्पादन)

अगर M का मान 20000 हो तो K = ½ हो एवं O = 10,000 हो तो

$$\frac{20{,}000}{\frac{1}{2} \times 10{,}000} = \frac{2}{\frac{1}{2}}$$

$$= \frac{2}{1} \times \frac{1}{2} = 4$$ रु० मूल्य

* प्रो० पीगू का समीकरण *

$$P = \frac{KR}{M} \quad \text{--- (I)}$$

जहाँ: P = मुद्रा की एक इकाई का मूल्य।
K = वास्तविक आय का वह भाग जिसे लोग नगद रूप में रखते हैं;
M = मुद्रा की मात्रा
R = कुल वास्तविक आय

$$P = \frac{KR}{M} \quad \text{--- (I)}$$

∴ मूल्य स्तर = $\frac{M}{KR}$

अगर मुद्रा की मांग में बैंक जमा को भी शामिल कर दिया जाए तो समीकरण निम्नलिखित होगा :—

$$P = \frac{KR}{M} \{c + h(1-c)\}$$

जहाँ c ⇒ आय का वह भाग जिसे लोग नगद भाग अपने पास रखते हैं।
$1-c$ ⇒ आय का वह भाग जिसे लोग बैंकों में रखते हैं;
h ⇒ बैंक जमा का वह भाग जिसे नगद रूप में बैंक अपने पास रखता है।

प्रो० रॉबर्टसन का समीकरण

रॉबर्टसन ने मुद्रा का परिमाण सिद्धांत का निम्नलिखित समीकरण दिए हैं :—

$$M = KPT \quad \text{--- (I)}$$

$$\text{or } P = \frac{M}{KT} \quad \text{--- (II)}$$

where is : P = मुद्रा स्तर

M = मुद्रा की मात्रा

K = समय की वह अवधि (एक वर्ष के आमदनी के रूप में) जिसे सुरक्षित रूप से रखकर मुद्रा की मांग की जाती है।

T = कुल व्यापार की परिमाण

कैम्ब्रिज के अर्थशास्त्रियों द्वारा ~~कल्पाकिंत~~ उपर्युक्त तीन समीकरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि उपर्युक्त तीनों समीकरण समान हैं मार्शल का 'O' ही पीगू का R तथा रार्बटसन का T है अगर इन तीनों को B मान लिया जाए तो कैम्ब्रिज समीकरण का निम्नलिखित स्वरूप होगा।

$$P = \frac{M}{KO} \quad \{\text{where is } B = O = R = T\}$$

अगर $M = 60.000$; $K = 1/2$; $O = 30.000$ तो

$$P = \frac{60.000}{\frac{1}{2} \times 30.000} \quad \text{or} \quad P = 4$$

अतः मूल्य स्तर 4 होगा।

कैम्ब्रिज से स्पष्ट है कि मूल्य का स्तर निम्नलिखित तीन तत्वों M, K एवं B पर निर्भर करती है।

(I) अगर M को दुगुना कर दिया जाय तथा K एवं B स्थिर रहे तो मूल्य भी दुगुना होगा।

$$\frac{2M}{K \cdot B} = 2 \cdot P$$

(II) अगर B को दुगुना कर दिया तो मूल्य घटकर आधा हो जाएगा।

$$\frac{M}{K2B} = \frac{1}{2}\frac{M}{KB} = \frac{1}{2}P$$

(III) मुद्रा की मांग एवं मूल्य स्तर के बीच विलोमानुपातिक सम्बन्ध होता है तो

$$\frac{OM}{2KP} = \frac{1}{2}\frac{M}{KP} = \frac{1}{2}P$$

अर्थात मुद्रा की माँग को दुगुना करने से मूल्य स्तर आधा हो जाता है।

(IV) अगर M एवं K को दुगुना करते हैं तो मूल्य स्तर अपरिवर्तित रहेगा।

$$\frac{2M}{2KP} = P$$

अल्पकाल में चूंकि मुद्रा की मात्रा एवं क्रय-विक्रय की परिमाण स्थिर रहता है इसलिए कैम्ब्रिज अर्थशास्त्रियों के अनुसार मुद्रा की मूल्य स्तर को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण तत्व मुद्रा की मांग होती है जबकि, फिशर के अनुसार मूल्य स्तर को प्रभावित करने का महत्वपूर्ण तत्व मुद्रा की मात्रा होती है।

मुद्रा की मांग एवं मूल्य स्तर के बीच विपरीत सम्बन्ध होता है क्योंकि मुद्रा की मांग में वृद्धि का अर्थ है वस्तु की मांग में कमी वस्तु की मांग घटने से मूल्य स्तर घटेगी। उसी प्रकार मुद्रा की मांग में कमी का अर्थ वस्तु की मात्रा में वृद्धि तथा वस्तु की मांग बढ़ते पर मूल्य स्तर बढ़ेगा।

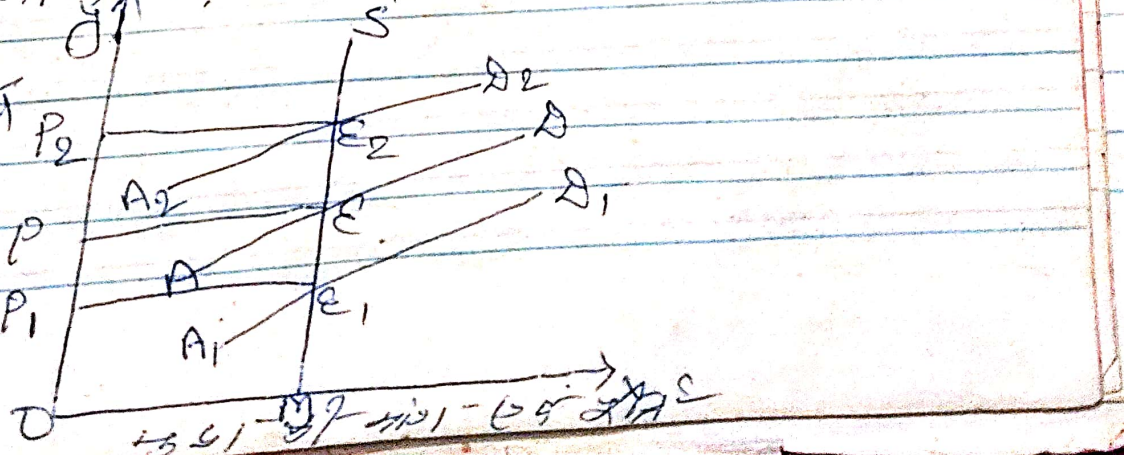

रेखाचित्र में AD मुद्रा की मांग एवं MS मुद्रा की पूर्ति रेखा है अगर मुद्रा की मांग AD से बढ़कर A_1D_1 हो जाता है तो मूल्य स्तर OP से घटकर OP_1 हो जाता है तथा मुद्रा की मांग घटकर AD से बढ़कर A_2D_2 हो जाए तो मूल्य स्तर OP से बढ़कर OP_2 हो जाता है।

मुद्रा की मांग एवं पूर्ति

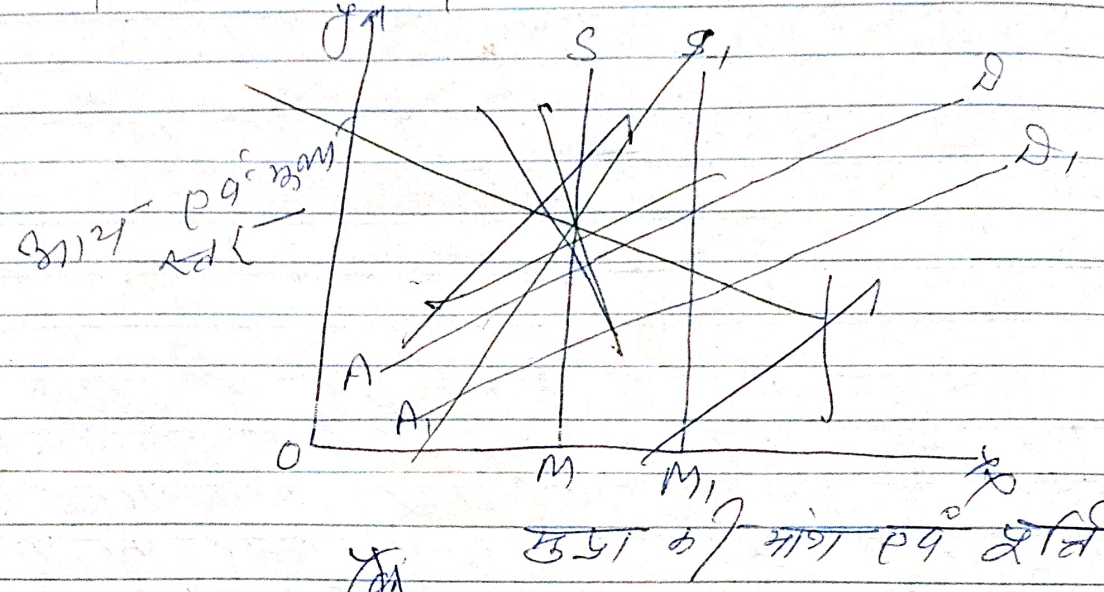

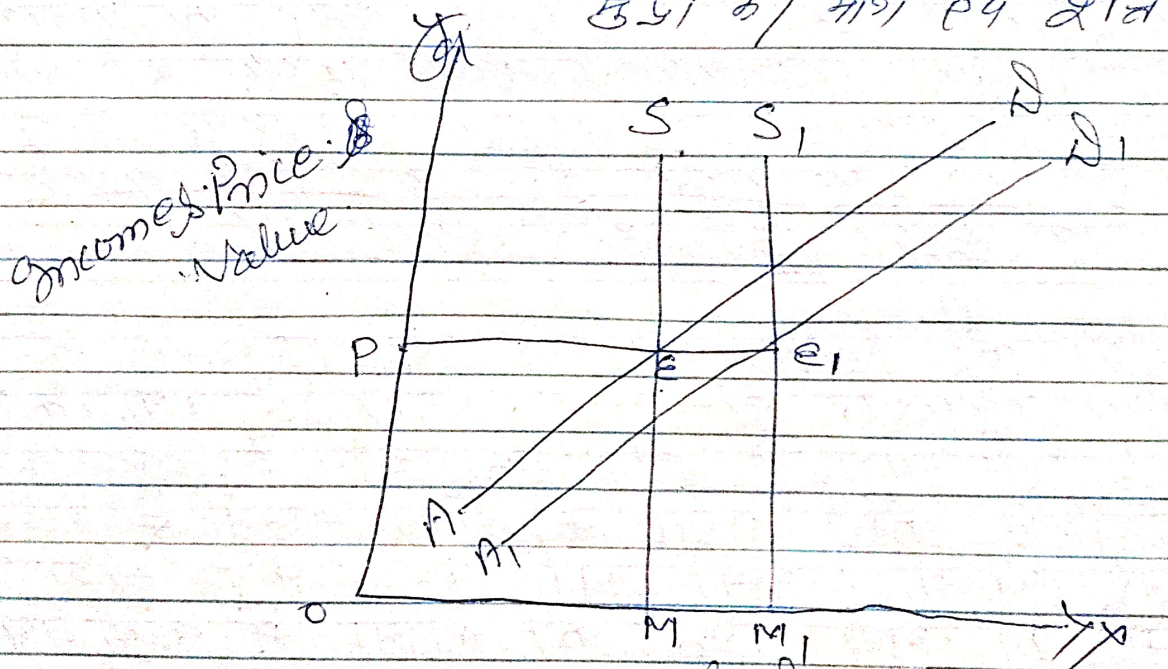

Money & Demand Supply.

अगर मुद्रा की मांग AD से बढ़कर A_1D_1 एवं मुद्रा की मात्रा OM से समान अनुपात में बढ़कर OM_1 हो जाय तो मूल्य स्तर P अपरिवर्तित रहेगा।

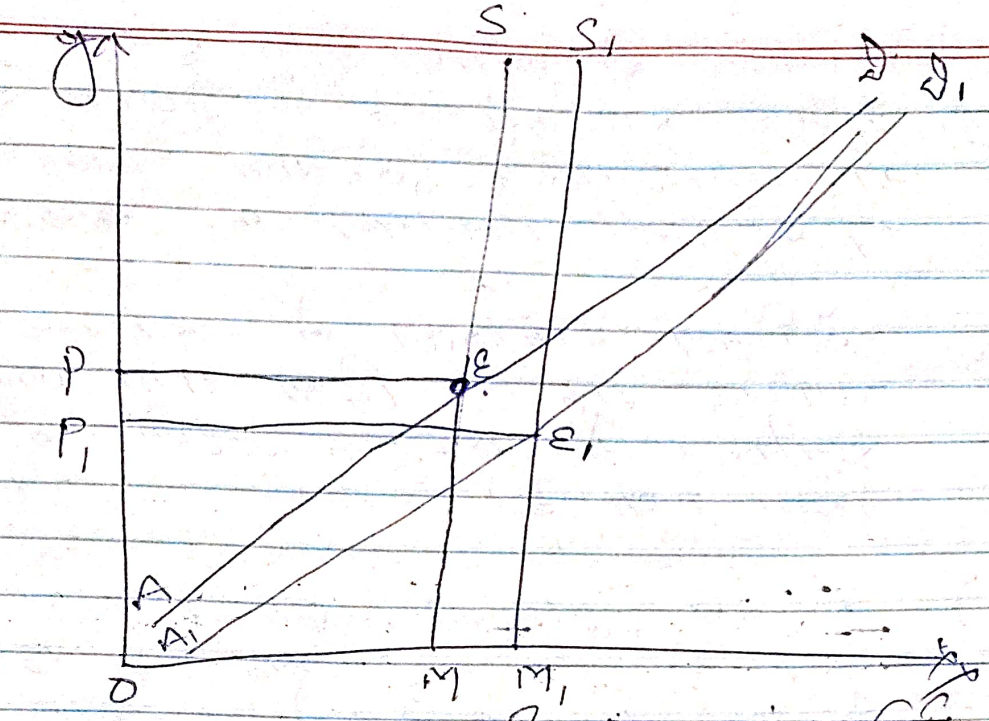

मुद्रा की मांग एवं पूर्ति

अगर मुद्रा की मांग AD से बढ़कर AD_1 तथा मुद्रा की पूर्ति अपेक्षाकृत कम अनुपात में OM से बढ़कर OM_1 हो जाए तो मूल्य स्तर OP से घटकर OP_1 हो जाएगा।

कैम्ब्रिज के दृष्टिकोण से मुद्रा की मांग क्रय विक्रय एवं आकस्मिक सुरक्षा के उद्देश्य से की जाती है मुद्रा की मांग अनेक तत्वों से प्रभावित होता है जैसे लोगों की आय, मजदूरी, भुगतान की अवधि, विकास स्तर आदि।

कैम्ब्रिज के दृष्टिकोण की श्रेष्ठता :-

(I) कैम्ब्रिज समीकरण का K, फिशर की अपेक्षा श्रेष्ठ है क्योंकि K की माप आसानी से की जा सकती है जबकि V का माप कठिन है।

(II) कैम्ब्रिज समीकरण में K के विश्लेषण से मानवीय आकांक्षाओं को प्रदर्शित किया जा सकता है जो

जो फिशर से संभव नहीं है।

(III) कैम्ब्रिज समीकरण के विश्लेषण से हम भविष्य की अनिश्चितताओं उम्मीदों (आशाओं) एवं ब्याज की दर भी विश्लेषण कर सकते हैं।

(IV) कैम्ब्रिज समीकरण में भावात्मक तत्वों को अधिक महत्व दिया गया जबकि फिशर की समीकरण में वस्तुगत तत्वों को अधिक महत्व दिया गया है।

(V) कैम्ब्रिज दृष्टिकोण व्यापार चक्र की व्यवस्था करना भी अधिक उपयुक्त है मुद्रा की मांग में परिवर्तन करने से व्यापार चक्र में परिवर्तन होता है 1929 के आर्थिक मंदी का मुख्य कारण K में अत्यधिक वृद्धि था।

(VI) केन्स ने कैम्ब्रिज दृष्टिकोण के आधार पर ही अपने तरलता अधिमान सिद्धांत का प्रतिपादन किया।

(~~VII~~)

लेकिन, सेम्बेलशन, Patinkin आदि अर्थशास्त्रियों का मत है कि कैम्ब्रिज एवं फिशर के समीकरण में कोई मौलिक अंतर नहीं है।

$$M = KPT$$

$$\text{or } M = \frac{1}{V} PT \quad \left\{ K = \frac{1}{V} \right\}$$

$$\text{or } MV = PT$$

कैम्ब्रिज समीकरण की आलोचनाएँ :-

(I) कैम्ब्रिज समीकरण में वास्तविक राष्ट्रीय उत्पाद की गणना करना अत्यंत कठिन है।

(II) कैम्ब्रिज दृष्टिकोण से सट्टा उद्देश्य हेतु की माने जाने वाली मुद्रा की मांग की व्याख्या नहीं किया गया है।

(III) कैम्ब्रिज समीकरण से मुद्रा की मात्रा एवं मूल्य स्तर के बीच के संबंध की व्याख्या का राष्ट्रीय आय का विश्लेषण नहीं किया जा सकता है।

(IV) यह सिद्धांत बचत एवं विनियोग की उपेक्षा की गई है जो मूल्य स्तर को प्रभावित करते हैं।

(V) कैम्ब्रिज के सिद्धांत के माध्यम से व्यापार चक्र का विश्लेषण नहीं किया जा सकता है।

(VI) कैम्ब्रिज समीकरण से सामान्य मूल्य स्तर का विश्लेषण नहीं किया जा सकता है।

निष्कर्ष :—

कैम्ब्रिज समीकरण भी एक पूर्ण सिद्धांत नहीं है इसमें मुद्रा की मांग को अधिक महत्व दिया गया है लेकिन यह निश्चित रूप से फिशर के दृष्टिकोण से श्रेष्ठ है।

समाप्त